# कलीसिया का आना

प्रेरितों के काम में चौंकाने वाली एक और नई बात हुई जिससे अपने मसीह में परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं के चरम का पता चला। इससे पहले की गई सभी भविष्यवाणियां पूरी हुईं, और आज भी यह मनुष्य के साथ परमेश्वर के सम्बन्ध का चरम है। इससे पहले मनुष्य को कभी कोई ऐसी आशीष, अवसर या सर्वशक्तिमान परमेश्वर के साथ नहीं जोड़ा गया था।

यह नई आशीष कलीसिया थी। वास्तव में नये नियम में ''कलीसिया'' शब्द पहली बार उस संदर्भ में मिलता है जहां यीशु ने प्रतिज्ञा की, कि ''मैं ... अपनी कलीसिया बनाऊंगा'' (मत्ती 16:18)। इस शब्द का पहली बार इस्तेमाल प्रेरितों 5:11 में होता है, जब ''सारी कलीसिया पर ... बड़ा भय छा गया।'' यद्यपि किंग जेम्स वाले अंग्रेज़ी अनुवाद में प्रेरितों 2:47 में ''कलीसिया'' शब्द का इस्तेमाल हुआ है, परन्तु मूल यूनानी शास्त्र में उस आयत में यह शब्द नहीं मिलता। KJV के अनुवाद में इस प्रकार लिखा गया है, ''उद्धार पाने वालों को प्रभु कलीसिया में मिला लेता था।''[1] बाद के हिन्दी के अनुवाद में ''उनमें मिला देता था'' है।

नये नियम में ''कलीसिया'' और ''कलीसियाएं'' शब्द 114 बार मिलता है, 20 बार तो केवल प्रकाशितवाक्य में ही प्रयुक्त हुआ है। बाइबल के छात्रों के मन में इस शब्द का एक विशेष स्थान है। 33 ईस्वी में यीशु के काम द्वारा मसीहियों के मनों में लाया गया यह शब्द संसार के लिए कुछ नया था; और लोगों के उस समूह को, जो कि *उसकी* देह है, प्रभु की ओर से अन्नतकाल में उद्धार तथा पुरस्कार देने की प्रतिज्ञा की गई है (इफिसियों 1:22, 23; 5:23)।

प्रेरितों के काम नामक पुस्तक की कहानी से पता चलता है कि बहुत से स्थानों पर कलीसियाएं पहले ही स्थापित थीं (प्रेरितों 9:31; 11:26; 14:23; 20:17)। जहां भी सुसमाचार का प्रचार किया गया लोगों ने सुनकर विश्वास किया और आज्ञा मानी, वहां आराधकों की एक मण्डली बन गई जो ''कलीसिया'' के नाम से प्रसिद्ध हुई। प्रेरितों के काम की पुस्तक इन प्राप्तियों के इतिहास को बताती है।

## कुछ विशेष

अंग्रेज़ी शब्द ''चर्च'' के लिए यूनानी शब्द *इकलीसिया* दो शब्दों *इक* जिसका

अर्थ ''बाहर'' और *केलियन* जिसका अर्थ ''बुलाना'' है, के मेल से बना है। इसलिए, *इकलीसिया* का अर्थ है ''बुलाए हुए लोग।'' इसका इस्तेमाल विभिन्न धार्मिक, सामाजिक, या राजनीतिक गुटों के लिए किया जा सकता है। पहली शताब्दी में इस शब्द का इस्तेमाल किसी विशेष कार्य को करने के लिए एकत्र हुए लोगों के समूह के लिए किया जाता था चाहे वह धार्मिक हो या कोई और। यीशु ने यूनानी भाषा के एक सामान्य शब्द को सदा के लिए एक विशेष धार्मिक अर्थ दे दिया था।[2]

मूलत:, *इकलीसिया* का केवल सैक्यूलर अर्थ था, इसका इस्तेमाल एक साधारण गांव या नगर की सभाओं के लिए किया जाता था। नेता लोग ''बुलाए हुए'' होते थे जो अपने समाज का आम मसलों में नेतृत्व करते थे।

*इकलीसिया* का एक दूसरा सैक्यूलर इस्तेमाल लोगों की सभा है, चाहे वह किसी भी प्रकार की हो। किसी भी उद्देश्य के लिए जब किसी सभा को बुलाया जाता था, तो एकत्र हुए लोगों या समूह के लिए *इकलीसिया* शब्द का इस्तेमाल होता था। देमेत्रियुस द्वारा पौलुस की निन्दा करने के बाद एकत्र हुई भीड़ से, इफिसुस में उपद्रव होने के समय तीन बार इस शब्द का इस्तेमाल भीड़ के लिए हुआ है (प्रेरितों 19:30, 32, 43)। नगर के मंत्री ने ''सभा'' अर्थात *इकलीसिया,* को भंग कर दिया, यहां यह शब्द केवल उस अवसर पर लोगों की विशेष सभा के लिए प्रयुक्त हुआ।

*इकलीसिया* शब्द के बहुत से आत्मिक प्रयोग हैं। (1) इस शब्द का इस्तेमाल उसके लिए किया जाता है जिसे बनाने की यीशु ने प्रतिज्ञा की थी (मत्ती 16:18), जिसे उसकी आत्मिक देह का नाम दिया जाता है (इफिसियों 1:22, 23), जिसे अपने लहू से खरीदने के लिए वह मरा (प्रेरितों 20:28) और जिसे सांकेतिक रूप से उसकी दुल्हन/पत्नी के रूप में जाना जाता है (इफिसियों 5:22-33)। इस प्रकार यह शब्द इस आत्मिक देह में मिलाए जाने वाले प्रत्येक शताब्दी के लोगों और ''मसीही'' होने का विशेष सम्बन्ध रखने वालों के लिए इस्तेमाल होता है (प्रेरितों 11:26)। यह ''एक देह'' अर्थात उन लोगों की एक आत्मिक देह है जिनका सम्बन्ध प्रभु से है, जिसके बारे में पौलुस ने यह सच्चाई बताते हुए लिखा कि एक ही कलीसिया है जिसका सम्बन्ध मसीह से है (इफिसियों 4:4)। इब्राहीम, मूसा, दाऊद, दानिय्येल और पुराने नियम में वर्णित सभी विश्वासी पुरुष तथा जो महिलाएं कलीसिया की स्थापना से पूर्व थीं; कभी भी प्रभु की कलीसिया के सदस्य नहीं थे। यद्यपि उनका उद्धार विश्वास से हुआ, परन्तु उन्हें मसीही कहना गलत है।

(2) *इकलीसिया* किसी विशेष स्थान पर सुसमाचार के प्रचार से आरम्भ हुए एक स्थानीय लोगों के समूह को भी कहा जाता है। जहां भी सुसमाचार का प्रचार किया गया और लोगों ने उसे मान लिया, वहां एक कलीसिया की स्थापना हो गई। इस शब्द का यह इस्तेमाल नये नियम में सामान्य है।

ये अलग-अलग साम्प्रदायिक कलीसियाएं नहीं थीं, जैसे कि बहुत से धार्मिक संगठनों द्वारा आज ''कलीसिया'' शब्द का इस्तेमाल किया जाता है। बल्कि, ये एक ही विश्वव्यापी कलीसिया अर्थात नये नियम में वर्णित एकमात्र कलीसिया की मण्डलियां थीं। नये नियम में किसी आधुनिक साम्प्रदायिक कलीसिया का उल्लेख नहीं है। आज की साम्प्रदायिक

कलीसियाओं के सदस्य अपने आप को नये नियम में नहीं पा सकते, क्योंकि आज जितनी भी साम्प्रदायिक कलीसियाएं हैं उन सभी का आरम्भ पृथ्वी पर मसीह के रहने के बहुत वर्षों बाद हुआ। यीशु ने किसी भी साम्प्रदायिक कलीसिया का आरम्भ नहीं किया था; बल्कि मनुष्यों ने ही इनका आरम्भ किया तथा यीशु किसी साम्प्रदायिक कलीसिया को खरीदने के लिए नहीं मरा था। हमारा प्रभु अपनी कलीसिया को खरीदने के लिए मरा था। यीशु ने किसी साम्प्रदायिक कलीसिया को बचाने की प्रतिज्ञा नहीं की; उसने अपनी ही आत्मिक देह का उद्धारकर्ता होने की प्रतिज्ञा की है (इफिसियों 5:23)। साम्प्रदायिक कलीसिया उस आत्मिक देह की शर्तों को पूरा नहीं करती; उसका नाम ही बाइबल में नहीं है।

(3) नये नियम में *इकलीसिया* शब्द का इस्तेमाल किसी स्थानीय मण्डली में परमेश्वर के पवित्र लोगों की किसी विशेष सभा का वर्णन करने के लिए किया जाता है (प्रेरितों 14:27; 1 कुरिन्थियों 11:18; 14:23, 28, 33)। पौलुस ने कुरिन्थुस की मण्डली में पाई जाने वाली कुछ बुराइयों को सुधारा। विशेषकर अध्याय 14 में, पौलुस ने उनकी सभाओं में आश्चर्यकर्म करने के दानों का दुरुपयोग रोका। बहुत बार, उसने प्रभु की आराधना के लिए कुरिन्थुस के पवित्र लोगों की सभा के लिए इकलीसिया शब्द का इस्तेमाल किया। वे इकट्ठे होते, आराधना करते, और फिर अपने-अपने घरों को चले जाते थे। इस प्रकार से इकट्ठे होने पर, उस विशेष अवसर पर ''कलीसिया'' या *इकलीसिया* कहलाना उनके लिए सामान्य था।

ये ''कलीसिया''[3] शब्द के सामान्य प्रयोग हैं, और नये नियम के किसी भी पद में किसी शब्द के सही अर्थ के लिए संदर्भ को ध्यान में रखने में छात्रों को बहुत सावधानी रखनी चाहिए। जब किसी शब्द के बहुत से अर्थ निकलते हों, तो संदर्भ को ध्यान में रखने और जल्दी से पढ़ने के लिए नहीं कहा जा सकता।

## कुछ विश्वव्यापी

प्रभु की कलीसिया की पहली मण्डली यरूशलेम में थी (प्रेरितों 2:41, 47; 8:1) और शीघ्र ही सीरिया के अन्ताकिया में ऐसा ही एक और समूह बन गया (प्रेरितों 11:25, 26)। फिर, प्रभु की योजना के अनुसार (प्रेरितों 1:8) सारे यहूदिया, गलील और सामरिया में मण्डलियों की स्थापना हो गई (प्रेरितों 9:31)। पौलुस की पहली मिशनरी यात्रा में, पिसिदिया के अन्ताकिया, इकुनियुस, लुस्त्रा और दिरबे में मण्डलियों की स्थापना हो गई थी (प्रेरितों 14:20-23)। दूसरी मिशनरी यात्रा के आरम्भ में, सूरिया और किलिकिया के क्षेत्रों में कलीसियाएं स्थापित हो चुकी थीं (प्रेरितों 15:41)।

शीघ्र ही, कुरिन्थुस (प्रेरितों 18:8; 1 कुरिन्थियों 1:1, 2); इफिसुस (प्रेरितों 20:17, 28; प्रकाशितवाक्य 2:1); थिस्सलुनीके (1 थिस्सलुनीकियों 1:1); रोम (रोमियों 16:5); फिलिप्पी (फिलिप्पियों 4:15); और असिया के छह अन्य नगरों, स्मुरना, पिरगमुन, थुआतीरा, सरदीस, फिलेदिलफिया और लौदीकिया में (देखिए प्रकाशितवाक्य 2 और 3) कलीसियाएं स्थापित हो गई थीं। गलतिया की बहुत सी कलीसियाओं का उल्लेख है

(1 कुरिन्थियों 16:1)। दमिश्क में भी एक मण्डली थी जिसका उल्लेख किया जा सकता है, क्योंकि पौलुस वहां चेलों के साथ मिलता था (प्रेरितों 9:10, 19ख, 25)।

## कुछ स्वाभाविक

पतरस तथा अन्य प्रेरितों ने यरूशलेम में सुसमाचार का प्रचार किया था (प्रेरितों 2)। फिलिप्पुस ने सामरिया में वचन का प्रचार किया (प्रेरितों 8:5) और तितर-बितर होने वाले चेले बड़े जोश से सीरिया के अन्ताकिया तक भी वचन को ले गए। प्रेरितों 11:19-21. पौलुस अपनी पहली मिशनरी यात्रा के दौरान, अन्ताकिया, इकुनियुम, लुस्त्रा और दिरबे नगरों में शिक्षा देता हुआ सुसमाचार को एशिया माइनर में ले गया (प्रेरितों 13; 14)।

पौलुस, सीलास और तीमुथियुस ने कुरिन्थुस में सच्चाई की शिक्षा दी (प्रेरितों 18:1-11), और थिस्सलुनीके के लोगों ने बड़ी प्रसन्नता तथा सादगी से उनकी बातों को परमेश्वर का वचन मानकर ग्रहण किया (1 थिस्सलुनीकियों 2:13)। बहुत अधिक सम्भावना है, कि एशिया के अन्य नगरों ने सुसमाचार को इफिसुस में पौलुस के तीन वर्ष के कार्य के दौरान सुना (प्रेरितों 19:10; 20:31)।

इन सभी स्थानों में, राज्य का बीज बोया जा रहा था जिससे राज्य के नागरिक उत्पन्न हुए (लूका 8:11)। सुसमाचार प्रचारकों को भले एवं निष्कपट मन मिले जिनमें राज्य का बीज बोया जा सकता था, उग सकता था, अंकुरित हो सकता था और कटाई के लिए तैयार हो सकता था।

## कुछ अनन्तकालिक

जिन लोगों को ''कलीसिया'' कहा गया, वे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के अनन्त उद्देश्य का परिणाम थे (इफिसियों 1:3-6; 3:10)। वे अपनी कलीसिया बनाने की यीशु की प्रतिज्ञा (मत्ती 16:18) और उन्हें पाप से अपने लहू से खरीदने का परिणाम थे (प्रेरितों 20:28; 1 पतरस 1:18, 19)। ये लोग परमेश्वर की आत्मिक देह, अर्थात कलीसिया के सिर यीशु के सामने समर्पित होना चाहते थे (इफिसियों 1:22, 23)। इन लोगों ने मसीह की आज्ञा मान ली थी (इफिसियों 5:23)।

आज कलीसिया उन लोगों से बनती है जिनके द्वारा परमेश्वर की अनन्तकालिक इच्छा पूरी होगी (इफिसियों 1:23)। ये वे लोग हैं जिनका उल्लेख परमेश्वर को महिमा देने के लिए पर्याप्त और ग्रहण योग्य लोगों के रूप में किया गया है (इफिसियों 3:21)। केवल ये ही लोग पवित्र याजक हैं जो परमेश्वर के सामने स्वीकार्य आराधना कर सकते हैं। ये चुने हुए लोग हैं, राज-पदधारी, याजकों का समाज, पवित्र लोग, परमेश्वर की निज प्रजा और परमेश्वर का पूर्ण अनुग्रह पाने वाले (1 पतरस 2:5, 9, 10)।

इसलिए, प्रभु की कलीसिया के सदस्य, अपने किसी अच्छे गुण के कारण नहीं बल्कि राजा की आज्ञा मानने की अपनी इच्छा और विश्वास योग्य रहकर अन्त तक उस पर भरोसा करने के कारण सचमुच विशेष हैं। उन्हें यीशु के लहू से धोया गया है (इफिसियों 5:26) और

वे बड़ी उम्मीद से उसके आने की प्रतीक्षा करते हैं। वे परमेश्वर के घराने अथवा परिवार के रूप में, उस दिन उसके आत्मिक लोगों को मिलने वाला सम्मान पाएंगे (1 तीमुथियुस 3:15; 1 यूहन्ना 3:1)।

## सारांश

प्रेरितों के काम में कुछ विशेष शुरुआत हुई। यह युगों को खोलकर बताने का चरम था (1 कुरिन्थियों 10:11)। मसीह के क्रूसारोहण के बाद वाले लोग सबसे अधिक आशीषित हैं। आज बाइबल के पाठक अपने लोगों के साथ परमेश्वर के इतिहास के दूसरी ओर झांक कर देख सकते हैं कि उसने कैसे न्याय किया। इन महान, ऐतिहासिक कार्यों का अध्ययन करने पर किसी भी मसीही के हृदय में आशा बन्ध सकती है। रोमियों 15:4. परमेश्वर ने अनन्तकाल से ही पापियों के उद्धार की योजना बनाई थी और उसने अपनी योजना को पूरा किया। प्रेरितों के काम की पुस्तक एक रोमांचकारी इतिहास है जो प्रकट करती है कि परमेश्वर ने इस उद्धार को कब, कहां और कैसे पूरा किया।

छुटकारे की योजना के चरम के निकट आने पर, यीशु ने अपनी कलीसिया बनाने की प्रतिज्ञा की। वह तीन वर्ष तक इस नई आत्मिक आर्थिकता और पहली शताब्दी में कलीसिया की वास्तविक स्थापना तथा विकास को पूरा करने के लिए बारह लोगों को शिक्षित करने के लिए सारे फलस्तीन में घूमा। यीशु ने अपनी कलीसिया तब बनाई, जब पवित्र आत्मा से सामर्थ पाकर प्रेरितों ने वही किया जैसा करने की यीशु ने उन्हें शिक्षा दी थी। ''अधोलोक के फाटक'' (मत्ती 16:18) भी यीशु द्वारा कलीसिया की स्थापना करने में आड़े न आ सके और न ही शैतान इस पर कभी प्रबल हुआ। प्रभु की कलीसिया नये नियम के समयों में भी कायम रही, और न्याय के दिन तक भी रहेगी। प्रेरितों के काम उस रोमांचकारी विजय का आत्मा की प्रेरणा से लिखा इतिहास है।

---

पाद टिप्पणियां

[1]KJV में प्रेरितों 2:47 में ''church'' अर्थात कलीसिया शब्द शिक्षा सम्बन्धी किसी गलती को नहीं दिखाता, क्योंकि बाद में यह स्पष्ट है कि पिन्तेकुस्त के दिन सुसमाचार को मानने वाले इन्हीं यहूदियों को ''कलीसिया'' कहा गया था (प्रेरितों 5:11; 8:1, 3)। [2]यीशु ने यूनानी भाषा में इस्तेमाल होने वाले एक और सामान्य शब्द, *बेपटिस्मोस* का यही इस्तेमाल किया। यह शब्द *baptizein* से निकला है जिसका अर्थ है ''डुबोना, गोता लगाना, या डुबकी लगाना।'' ऊन तथा रंग के कारखानों में कपड़े को अलग-अलग रंग देने के लिए रंग के हौज़ों में कपड़े के थान डुबोने के लिए इसका आम इस्तेमाल होता था। यदि 1611 में KJV बाइबल के अनुवादक इस शब्द का अनुवाद करते, तो इसे ''डुबोया'' ही पढ़ा जाना था। इसके बजाय, चर्च ऑफ इंग्लैण्ड में मसीही बनने वालों पर छिड़काव की पुरानी परम्परा के कारण, अनुवादकों ने अंग्रेज़ी भाषा में एक नये शब्द ''बपतिस्मा'' की खोज कर ली। यह अनुवाद नहीं, बल्कि लिप्यान्त्रण था। [3]इन तीन उपयोगों के स्पष्ट अपवाद में, *एकलिसिया* का इस्तेमाल एक और बार हुआ है: जब स्तिफनुस ने ''जंगल में कलीसिया'' का उल्लेख किया (प्रेरितों 2:38)। इस संदर्भ में, स्तिफनुस मिसर की गुलामी से बाहर निकालने और प्रतिज्ञा किए हुए कनान देश में ले जाने के परमेश्वर के उद्देश्य के लिए सीनै के जंगल में एकत्र हुए यहूदियों की बात कर रहा था।